Functions or Importance

परिवार के प्रकार्य अथवा महत्व

सभी समाजों में परिवार एक प्रकार्यात्मक इकाई है परिवार का स्वरूप चाहे जैसा भी हो, परिवार व्यक्ति और समूह के लिए कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कार्य करता है जिसके फलस्वरूप मानव सभ्यता के अनेक स्तरों को पार करता हुआ एक ऐसे मानव के रूप में परिवर्तित किया है जिसके पास संस्कृति है, अविष्कार करने की क्षमता है तथा जो मानवीय गुणों के प्रति जागरूक है। वास्तव में परिवार के सभी कार्य ऐसे हैं कि उन्हें अन्य संगठनों के द्वारा भी पूरा किया जा सकता है लेकिन परिवार के अतिरिक्त कोई भी दूसरा संगठन ऐसा नहीं है जो इन कार्यों को असीमित उत्तरदायित्व की भावना और नैतिक नियमों के साथ पूरा कर सके। इस दृष्टिकोण से परिवार के महत्व को उसके कुछ विशेष कार्यों की सहायता से इस प्रकार समझा जा सकता है—

(1) <u>जैविकीय कार्य</u> (Biological Functions) → जैविकीय कार्यों का सम्बन्ध मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने से है। इस क्षेत्र में परिवार के कार्यों को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) <u>यौन इच्छाओं की पूर्ति</u> → परिवार प्रत्येक व्यक्ति को विवाह के द्वारा यौनिक इच्छा की पूर्ति करने का अवसर प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण से परिवार स्त्रियों और पुरुषों के बीच एक मर्यादा तथा नैतिकता को ही विकसित नहीं करता बल्कि पारस्परिक संघर्षों की सम्भावना को भी समाप्त कर देता है। जिन आदिम समाजों में यौन सन्तुष्टि के क्षेत्र में व्यक्तियों को काफी स्वतन्त्रता मिली हुई है, वहां भी परिवार इस स्वतन्त्रता पर नियन्त्रण लगाकर कुछ निषेधों को विकसित करता है।

(ii) <u>सन्तानोत्पत्ति की व्यवस्था</u> → परिवार के अभाव में सन्तान का जन्म तो हो सकता है लेकिन उसके पालन-पोषण की

28 SATURDAY • JANUARY

कोई समुचित व्यवस्था नहीं हो सकती। ऐसे बच्चे को वैध भी नहीं माना जाता। इस दृष्टिकोण से परिवार का एक महत्वपूर्ण कार्य बच्चों के जन्म को वैध बनाना तथा उनके पालन-पोषण की समुचित व्यवस्था करना है। परिवार के इसी कार्य के फलस्वरूप मानव समाज की निरन्तरता बनी रह सकी है।

(iii) शारीरिक सुरक्षा प्रदान करना → परिवार का एक महत्वपूर्ण कार्य अपने सदस्यों को जन्म के समय से लेकर मृत्यु तक शारीरिक सुरक्षा प्रदान करना है। इसके अन्तर्गत बीमारी, बेकारी और दुर्घटना की स्थिति में व्यक्ति को संरक्षण देना, वृद्ध तथा अपंग व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ और मानसिक सुरक्षा प्रदान करना तथा सभी सदस्यों की जीवन-रक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करना परिवार के प्रमुख कार्य है। यह सभी कार्य इतने महत्वपूर्ण हैं कि इनके बिना व्यक्ति शारीरिक रूप से अपने को सुरक्षित महसूस नहीं कर सकता।

(2) सामाजिक कार्य → परिवार के द्वारा किये जाने वाले सामाजिक कार्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं के द्वारा व्यक्ति का समाजीकरण होता है। इन्हें मुख्यतः चार भागों में बांटा गया है:—

29 SUNDAY (1) व्यक्ति का समाजीकरण करना → समाजीकरण का तात्पर्य व्यक्ति को एक जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की क्षमताएँ प्रदान करना है। इसके लिए परिवार व्यक्ति की पाशविक प्रेरणाओं पर नियन्त्रण लगाता है, उसकी आदतों का निर्माण करता है, अन्य व्यक्तियों के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझता है, आत्म का विकास करता है तथा विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को सीख देता है।

(ii) स्थिति प्रदान करना →

परिवार एक ऐसा प्रतिनिधि है जो सामाजिक ढाँचे में व्यक्ति की स्थिति तथा उससे सम्बन्धित दायित्वों को निर्धारित करता है। साधारणतया परिवार के सम्मान के अनुसार ही व्यक्ति को अपने पूरे समूह में एक विशेष प्रस्थिति प्राप्त होती है। इसके फलस्वरूप सभी व्यक्ति अपने परिवार की परम्पराओं तथा आदेशों का उल्लंघन करने का प्रयत्न नहीं करते।

(iii) सामाजिक नियन्त्रण →

परिवार का एक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति के जीवन को नियन्त्रित और नियमबद्ध करना है। यह कार्य नित्य-प्रति के उपदेशों, सुखद अनुभवों, प्रशंसा, आलोचना, हास्य-व्यंग्य तथा एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायित्वों की पूर्ति के द्वारा किया जाता है। आदिम समाजों में परिवार से सम्बन्धित लोकगाथाएँ भी व्यक्तियों के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखने का एक प्रभावशाली साधन सिद्ध हुई है।

(iv) प्रशिक्षण का कार्य →

परिवार का एक महत्वपूर्ण कार्य बच्चों को मानवीय गुणों तथा सामाजिक मूल्यों का प्रशिक्षण देना भी है। बच्चा अनुकरण के द्वारा ही परिवार के वातावरण में दया, सहानुभूति, प्रेम, एकता, सद्भावना तथा भ्रातृत्व जैसे गुणों को सीखता है। इसके अतिरिक्त परिवार के द्वारा बच्चों को उन सभी सामाजिक मूल्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है जिनके अनुसार उससे व्यवहार करने की आशा की जाती है। इन सभी कार्यों का बच्चे के भावी व्यक्तित्व पर एक स्थायी प्रभाव पड़ता है। इसी कारण परिवार को जीवन की प्रारम्भिक पाठशाला कहा जाता है।

(3) सांस्कृतिक कार्य → सभी परिवार अपने सदस्यों के लिए कुछ ऐसे कार्य करते हैं जिससे अपने समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रभावपूर्ण तथा

स्थायी बनाये रखा जा सके। इस आधार पर परिवार के दो कार्य अधिक महत्वपूर्ण हैं:—

(I) सांस्कृतिक व्यवहारों की शिक्षा → सभी समुदायों और विशेषकर आदिम समाजों में अनेक आदर्श नियमों, जनरीतियों लोकाचारों तथा परम्पराओं का इतना महत्व होता है कि उनके अनुसार व्यवहार किये बिना व्यक्ति अपने समूह से अनुकूलन नहीं कर सकता। परिवार ही व्यक्ति को इन सभी सांस्कृतिक विशेषताओं का ज्ञान कराता है तथा विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण द्वारा सदस्यों में समान रुचियों तथा मनोवृत्तियों को विकसित करता है।

(II) संस्कृति का संचरण → परिवार अपने समाज की संस्कृति से सम्बन्धित मूल्यों, विश्वासों, नैतिक नियमों तथा व्यवहार प्रतिमानों का अर्थ स्पष्ट करके उन्हें बच्चों के स्वच्छ मस्तिष्क पर अंकित कर देता है। इसी से सांस्कृतिक विशेषताओं में एक निरन्तरता बनी रहती है। क्योंकि परिवार में जन्म लेने वाला प्रत्येक सदस्य इन विशेषताओं को अपने जीवन के अभिन्न अंग के रूप में देखता है।

(4) आर्थिक कार्य → सभी परिवार सदैव से आर्थिक क्रियाओं के मूल केन्द्र रहे हैं। इसका कारण यह है कि परिवार द्वारा उपभोग, उत्पादन, विनिमय और वितरण के सभी कार्य पूर्ण किये जाते हैं। इस दृष्टिकोण से परिवार के आर्थिक कार्यों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

(1) जीविकोपार्जन की व्यवस्था → परिवार आरम्भ से ही अपने सदस्यों के लिए उत्पादन अथवा जीविका-उपार्जन की व्यवस्था करते रहे हैं। अत्यधिक आदिम काल में यह कार्य परिवार तब भी करता था जब पुरुष जंगलों में शिकार करने और भोजन को

खोज में निकल जाते थे तथा स्त्रियाँ घर में बच्चों का पालन-पोषण और पशुओं की देखभाल करती थी। जनजातियों में परिवार आज भी अपने सदस्यों के बीच श्रम-विभाजन करके जीविकोपार्जन की व्यवस्था करने का प्रयत्न करते हैं - खादर एवं पनियन जनजातियाँ।

(ii) सम्पत्ति का प्रबन्ध → परिवार ही वह महत्वपूर्ण संस्था है जो अपने सदस्यों द्वारा उपार्जित सम्पत्ति का समुचित प्रबन्ध करके सदस्यों के बीच परस्पर संघर्षों की सम्भावना को कम कर देती है। यह सच है कि बहुत-सी जनजातियों में व्यक्तिगत सम्पत्ति को कोई महत्व नहीं दिया जाता लेकिन सभ्य समूहों के सम्पर्क से उत्पन्न नयी दशाओं के कारण परिवार का यह कार्य निरन्तर महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

(iii) उत्तराधिकार की व्यवस्था → परिवार के द्वारा ऐसी परम्पराओं तथा नियमों को विकसित किया जाता है जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को वंशानुगत सम्पत्ति में अपना हिस्सा प्राप्त हो सके। यह कार्य परिवार के संगठन की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

(iv) व्यवसाय का ज्ञान → परिवार अपने सदस्यों को बहुत आरम्भिक आयु से ही एक विशेष व्यवसाय का ज्ञान प्रदान करने वाला प्रमुख अभिकर्ता है। जनजातीय समाजों में परिवार का यह कार्य इसलिए और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि वहाँ जीविकोपार्जन अथवा व्यवसाय के लिए एक विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

(5) धार्मिक कार्य → धार्मिक कार्यों के क्षेत्र में तो परिवार का

सदैव से ही प्रचलित रहा है। परिवार में ही बच्चा अपने धार्मिक विश्वासों को सीखता है तथा अनेक पौराणिक गाथाओं के माध्यम से पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक तथा उचित और अनुचित में भेद करना सीखता है। जिन जनजातियों में धर्म के साथ जादुई विश्वास मिले-जुले होते हैं वहाँ परिवार ही अपने सदस्यों को जादुई क्रियाओं का प्रशिक्षण देता है तथा ऐसी क्रियाओं में भाग लेना सिखाता है।

⑥ राजनीतिक कार्य →

आदिम समाजों के सन्दर्भ में परिवार के राजनीतिक कार्य भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसका कारण है कि आदिम समाजों में जटिल समाजों के समान न तो कोई सरकार होती है और न ही किसी प्रकार के विकसित कानून। यहाँ मुखिया, जनजातीय पंचायत अथवा वृद्धजन समिति के हाथों में ही सभी अधिकार केन्द्रित रहते हैं तथा इनकी आज्ञाओं की अवहेलना करना एक गम्भीर अपराध के रूप में देखा जाता है। इस स्थिति में यह कार्य परिवार का है कि वह अपने सदस्यों को जनजातीय नियमों से परिचित कराये तथा सदस्यों के व्यवहारों को स्वयं भी नियन्त्रित करे। परिवार अपने सदस्यों को नियमों के पालन की सीख ही प्रदान नहीं करता बल्कि उन सदस्यों को दण्ड भी देता है जो जनजातीय नियमों का उल्लंघन करते हैं। परिवार के इसी कार्य से सदस्यों में अनुशासन की भावना को प्रोत्साहन मिलता है।

⑦ मनोरंजन के कार्य →

सभी जनजातियों में अनेक लोक-गाथाओं एवं वैयक्तिक अनुभवों के माध्यम से परिवार अपने सदस्यों को मनोरंजन प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त धार्मिक उत्सवों तथा त्यौहारों का आयोजन भी परिवार का ही कार्य है जिसका उद्देश्य सदस्यों को तनाव से छुटकारा दिलाना तथा उनमें आनन्द का संचार करना है। यह सच है कि बाहरी समूहों के सम्पर्क तथा सांस्कृतिकरण की प्रक्रिया में

वृद्धि होने से जनजातीय परिवारों का यह कार्य कुछ कम पड़ता जा रहा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है जो व्यक्ति तथा समाज के लिए अनेक उपयोगी कार्य करने के कारण सामाजिक संरचना की मौलिक इकाई बन गई है परन्तु वर्तमान युग में जनजातीय परिवारों की संरचना तथा कार्यों में अनेक परिवर्तन स्पष्ट होने लगे हैं एक और बाह्य समूहों के सम्पर्क के कारण आर्थिक तथा मनोरंजन सम्बन्धी कार्य परिवार के अधिकार-क्षेत्र से बाहर होते जा रहे हैं तो दूसरी ओर, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों पर भी परिवार का पूर्ण एकाधिकार देखने को नहीं मिलता। यह सच है कि जैविकीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्य आज भी परिवार के द्वारा ही किये जाते हैं लेकिन इनके परम्परागत रूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। इनके पश्चात भी अन्य संगठनों तथा संस्थाओं की तुलना में परिवार का महत्व आज भी कहीं अधिक है क्योंकि केवल परिवार ही व्यक्ति के समाजीकरण का सर्वप्रमुख आधार है।